कविकुलगुरु कालिदास संस्कृत विश्वविद्यालय, रामटेक
हस्तलिखित संग्रह
दाखल क्र M 165 विषय स्तोत्र
नाव. शिवसहस्रनाम (mss.)
लेखक/लिपीकार —
पृष्ठ 40 काळ — पूर्ण/अपूर्ण

M165

श्री गणेशायनमः॥ हरिः ॐम्॥ नमः। ते। रुद्र। मन्यवे। उतोइति। ते। इषवे। नमः। नमः। ते। अस्तु। धंन्वने। बाहुभ्यामितिबाहुऽभ्यां। उत। ते। नमः। या। ते। इषुः। शिवतमेतिशिवऽतमा। शिवं। बभूव। ते। धनुः। शिवा। शरव्या। या। तव। तया। नः। रुद्र। मृडय। या। ते। रुद्र। शिवा। तनूः। अघोरा। अपापकाशिनीत्यपापऽकाशिनी। तया। नः। तनुवा। शंतमयेतिशंऽतमया। गिरिशंतेतिगिरिऽशंत। अभि। चाकशीहि। यां। इषुं। गिरिशंतेतिगिरिऽशंत। हस्ते॥ १॥ बिभर्षि। अस्तवे। शिवां। गिरित्रेतिगिरिऽत्र। तां। कुरु। मा। हिंसीः। पुरुषं। जगत्। शिवेन। वचसा। त्वा। गिरिश। अच्छ। वदामसि। यथा। नः। सर्वं। इत्। जगत्। अयक्ष्मं। सुमनाइतिसुऽमनाः। असत्। अधीति। अवोचत्। अधि

प० दे० वक्तेसधिऽवक्ता। प्रथमः। दैव्यः। भिषक्। अहीन्। च। सर्वान्। जंभय
न्। सर्वाः। च। यातुधान्यइतियातुऽधान्यः। असौ। यः। ताम्रः। अरुणः।
॥३॥
उत। बभ्रुः। सुमंगलइतिसुऽमंगलः। ये। च। इमां। रुद्राः। अभितः।
दिक्षु॥२॥ श्रिताः। सहस्रशइतिसहस्रऽशः। अवेति। एषां। हे
डः। ईमहे। असौ। यः। अवसर्पतीत्यवऽसर्पति। नीलग्रीवइतिनी
लऽग्रीवः। विलोहितइतिविऽलोहितः। उत। एनं। गोपाइतिगोऽ
पाः। अदृशन्। अदृशन्। उदहार्यइत्युदऽहार्यः। उत। एनं। विश्वा। भू
तानि। सः। दृष्टः। मृडयाति। नः। नमः। अस्तु। नीलग्रीवायेतिनीलऽ ॥४॥
ग्रीवाय। सहस्राक्षायेतिसहस्रऽअक्षाय। मीढुषे। अथोइति। ये।

अस्य। सत्वानः। अहं। तेभ्यः। अकरं। नमः। प्रेति। मुंच। धन्वनः। त्वं। उ
भयोः। आर्त्न्योः। ज्यां। याः। च। ते। हस्ते। इषवः॥३॥ परेति। ताः। भगवइ
तिभगऽवः। वप। अवतत्येत्यवऽतत्य। धनुः। त्वं। सहस्राक्षेतिसहस्रऽअ
क्ष। शतेषुधइतिशतऽइषुधे। निशीर्येतिनिऽशीर्य। शल्यानां। मुखा। शि ति
वः। नः। सुमनाइतिसुऽमनाः। भव। विज्यमितिविऽज्यं। धनुः। कप
र्दिनः। विशल्यइतिविऽशल्यः। बाणवानितिबाणऽवान्। उत। अने
शन्। अस्य। इषवः। आभुः। अस्य। निषंगथिः। या। ते। हेतिः। मीढुष्टमे
तिमीढुःऽतम। हस्ते। बभूव। ते। धनुः। तया। अस्मान्। विश्वतः। त्वं। अ
यक्ष्मया। परीति। भुज। नमः। ते। अस्तु। आयुधाय। अनाततायेस

प॰दे॰ नोऽवतताय। धृष्णवे। उभाभ्यां। उत। ते। नमः। बाहुभ्यामिति बाहुऽभ्यां।
तव। धन्वने। परि। ते। धन्वनः। हेतिः। अस्मान्। वृणक्तु। विश्वतः। अ
॥२॥ योऽइतीयः। इषुधिरितीषुऽधिः। तव। आरे। अस्मत्। नीति। धेहि। तं॥१॥
नमः। हिरण्यबाहव इति हिरण्यऽबाहवे। सेनान्य इति सेनाऽन्ये। दिशां। च।
ति पतये। नमः। वृक्षेभ्यः। हरिकेशेभ्य इति हरिऽकेशेभ्यः। पशूनां। पतये। नमः।
नमः। नमः। सस्पिंजराय। त्विषीमत इति त्विषिऽमते। पथीनां। पतये।
नमः। नमः। बभ्लुशाय। विव्याधिन इति विऽव्याधिने। अन्नानां। प
तये। नमः। नमः। हरिकेशायेति हरिऽकेशाय। उपवीतिन इत्युपऽवी ॥२॥
तिने। पुष्टानां। पतये। नमः। नमः। भवस्य। हेत्यै। जगतां। पतये।

नमः। नमः। रुद्राय। आततायिन इत्याऽततायिने। क्षेत्राणां। पतये।
नमः। नमः। सूताय। अहंत्याय। वनानां। पतये। नमः। नमः॥१॥ रोहि
ताय। स्थपतये। वृक्षाणां। पतये। नमः। नमः। मंत्रिणे। वाणिजाय।
कक्षाणां। पतये। नमः। नमः। भुवंतये। वारिवस्कृतायेति वारिवःऽकृ
ताय। ओषधीनां। पतये। नमः। नमः। उच्चैर्घोषायेत्युच्चैःऽघोषाय। आ
क्रंदयत इत्याऽक्रंदयते। पत्तीनां। पतये। नमः। नमः। कृत्स्नवीतायेति कृ
त्स्नऽवीताय। धावते। सत्वनां। पतये। नमः॥२॥ नमः। सहमानाय। नि
व्याधिन इति निऽव्याधिने। आव्याधिनीनामित्याऽव्याधिनीनां। पतये। न
मः। नमः। ककुभाय। निषंगिण इति निऽसंगिने। स्तेनानां। पतये। नमः। न

प० ६०

॥३॥

मः। निषंगिण इति निऽसंगिने। इषुधिमत इतीषुधिऽमते। तस्कराणां। पतये। नमः। नमः। वंचते। परिवंचत इति परिऽवंचते। स्तायूनां। पतये। नमः। नमः। निचेरव इति निऽचेरवे। परिचरायेति परिऽचराय। अरण्यानां। पतये। नमः। नमः। सृकाविभ्य इति सृकाविऽभ्यः। जिघांसद्भ्य इति जिघांसत्ऽभ्यः। मुष्णतां। पतये। नमः। नमः। असिमद्भ्य इत्यसिमत्ऽभ्यः। नक्तं। चरद्भ्य इति चरत्ऽभ्यः। प्रकृंतानामिति प्रऽकृंतानां। पतये। नमः। नमः। उष्णीषिणे। गिरिचरायेति गिरिऽचराय। कुलुंचानां। पतये। नमः। नमः॥१॥ इषुमद्भ्य इतीषुमत्ऽभ्यः। धन्वाविभ्य इति धन्वाविऽभ्यः। च। वः। नमः। नमः। आतन्वानेभ्य इत्याऽतन्वानेभ्यः। प्रतिदधानेभ्य इति प्रतिऽदधा

॥३॥

नेभ्यः। च। वः। नमः। नमः। आयच्छद्भ्य इत्याऽयच्छत्ऽभ्यः। विसृजद्भ्य इति विऽसृजत्ऽभ्यः। च। वः। नमः। नमः। अस्यद्भ्य इत्यस्यत्ऽभ्यः। विध्यद्भ्य इति विध्यत्ऽभ्यः। च। वः। नमः। नमः। आसीनेभ्यः। शयानेभ्यः। च। वः। नमः। नमः। स्वपद्भ्य इति स्वपत्ऽभ्यः। जाग्रद्भ्य इति जाग्रत्ऽभ्यः। च। वः। नमः। नमः। तिष्ठद्भ्य इति तिष्ठत्ऽभ्यः। धावद्भ्य इति धावत्ऽभ्यः। च। वः। नमः। नमः। सभाभ्यः। सभापतिभ्य इति सभापतिऽभ्यः। च। वः। नमः। नमः। अश्वेभ्यः। अश्वपतिभ्य इत्यश्वपतिऽभ्यः। च। वः। नमः॥२॥ कुलुंचानां पतये नमो नमोऽश्वपतिभ्यस्त्रीणि च॥३॥ नमः। आव्याधिनीभ्य इत्याऽव्याधिनीभ्यः। विविध्यंतीभ्य इति विऽविध्यंतीभ्यः। च।

१० दे०
॥४॥

तः। नमः। नमः। उगणाभ्यः। तृंहतीभ्यः। चावः। नमः। नमः। गृत्से
भ्यः। गृत्सपतिभ्यइतिगृत्सपतिऽभ्यः। चावः। नमः। नमः। व्रातेभ्यः।
व्रातपतिभ्यइतिव्रातपतिऽभ्यः। चावः। नमः। नमः। गणेभ्यः। ग
णपतिभ्यइति। गणपतिऽभ्यः। चावः। नमः। नमः। विरूपेभ्य
इतिविऽरूपेभ्यः। विश्वरूपेभ्यइतिविश्वऽरूपेभ्यः। चावः। नमः।
नमः। महद्भ्यइतिमहत्ऽभ्यः। क्षुल्लकेभ्यः। चावः। नमः। नमः।
रथिभ्यइतिरथिऽभ्यः। अरथेभ्यः। चावः। नमः। नमः। रथेभ्यः।
॥३॥ रथपतिभ्यइतिरथपतिऽभ्यः। चावः। नमः। नमः। सेनाभ्यः।
सेनानिभ्यइतिसेनानिऽभ्यः। चावः। नमः। नमः। क्षत्तृभ्यइ ॥४॥

तिक्षत्तृऽभ्यः। संग्रहीतृभ्यइतिसंग्रहीतृऽभ्यः। चावः। नमः। नमः।
तक्षभ्यइतितक्षऽभ्यः। रथकारेभ्यइतिरथऽकारेभ्यः। चावः। नमः।
नमः। कुलालेभ्यः। कर्मारेभ्यः। चावः। नमः। नमः। पुंजिष्टेभ्यः। नि
षादेभ्यः। चावः। नमः। नमः। इषुकृद्भ्यइतीषुकृत्ऽभ्यः। धन्व
कृद्भ्यइतिधन्वकृत्ऽभ्यः। चावः। नमः। नमः। मृगयुभ्यइतिमृ
गयुऽभ्यः। श्वनिभ्यइतिश्वनिऽभ्यः। चावः। नमः। नमः। श्वभ्य
इतिश्वऽभ्यः। श्वपतिभ्यइतिश्वपतिऽभ्यः। चावः। नमः। [struck out]।
॥२॥ रथभ्यश्वपतिभ्यश्वदेच ॥४॥ नमः। भवाय। च। रुद्राय। च।
नमः। शर्वाय। च। पशुपतयइतिपशुऽपतये। च। नमः। नीलग्रीवा

प०रु० येति नील॒ऽग्रीवाय। च। शितिकंठायेति शितिऽकंठाय। च। नमः। कप
र्दिने। च। व्युप्तकेशायेति व्युप्तऽकेशाय। च। नमः। सहस्राक्षायेति स
हस्रऽअक्षाय। च। शतधन्वन इति शतऽधन्वने। च। नमः। गिरिशा
य। च। शिपिविष्टायेति शिपिऽविष्टाय। च। नमः। मीढुष्टमायेति
मीढुःऽतमाय। च। इषुमत इतीषुऽमते। च। नमः। ह्रस्वाय। च। वामनाय।
च। नमः। बृहते। च। वर्षीयसे। च। नमः। वृद्धाय। च। संवृध्वन इति
संऽवृध्वने। च॥१॥ नमः। अग्रियाय। च। प्रथमाय। च। नमः। आश
वे। च। अजिराय। च। नमः। शीघ्रियाय। च। शीभ्याय। च। नमः। ऊ
र्म्याय। च। अवस्वन्यायेत्यवऽस्वन्याय। च। नमः। स्रोतस्याय। च।

॥५॥

द्वीप्याय। च॥२॥ संवृध्वने च पंच विंशतिश्च॥५॥ नमः। ज्येष्ठाय।
च। कनिष्ठाय। च। नमः। पूर्वजायेति पूर्वऽजाय। च। अपरजायेत्यपरऽ
जाय। च। नमः। मध्यमाय। च। अपगल्भायेत्यपऽगल्भाय। च। नमः। ज
घन्याय। च। बुध्नियाय। च। नमः। सोभ्याय। च। प्रतिसर्यायेति प्रतिऽ
सर्याय। च। नमः। याम्याय। च। क्षेम्याय। च। नमः। उर्वर्याय। च। खल्या
य। च। नमः। श्लोक्याय। च। अवसान्यायेत्यवऽसान्याय। च। नमः।
वन्याय। च। कक्ष्याय। च। नमः। श्रवाय। च। प्रतिश्रवायेति प्रतिऽ
श्रवाय। च॥३॥ नमः। आशुषेणायेत्याशुऽसेनाय। च। आशुरथाये
त्याशुऽरथाय। च। नमः। शूराय। च। अवभिंदत इत्यवऽभिंदते। च।

प०रु० नमः। वर्मिणे। च। वरूथिने। च। नमः। बिल्मिने। च। कवचिने। च।
नमः। श्रुताय। च। श्रुतसेनायेति श्रुतऽसेनाय। च॥२॥ प्रतिश्रवाय
॥६॥ चपं चविंऽ शतिश्च॥६॥ नमः। दुंदुभ्याय। च। आहनन्यायेत्याऽहनन्या
य। च। नमः। धृष्णवे। च। प्रमृशायेति प्रऽमृशाय। च। नमः। दूताय। च।
प्रहितायेति प्रऽहिताय। च। नमः। निषंगिण इति निऽसंगिने। च। इ
षुधिमत इतीषुधिऽमते। च। नमः। तीक्ष्णेषव इति तीक्ष्णऽइषवे। च।
आयुधिने। च। नमः। स्वायुधायेति सुऽआयुधाय। च। सुधन्वन इति सु
ऽधन्वने। च। नमः। स्रुत्याय। च। पथ्याय। च। नमः। काट्याय। च। ॥६॥
नीप्याय। च। नमः। सूद्याय। च। सरस्याय। च। नमः। नाद्याय। च।

चतुष्पद इति चतुःऽपदे। विश्वं। पुष्टं। ग्रामे। अस्मिन्॥१॥ अनातुरमि
त्यनाऽतुरं। मृड। नः। रुद्र। उत। नः। मयः। कृधि। क्षयद्वीरायेति क्षयत्ऽ
वीराय। नमसा। विधेम। ते। यत्। शं। च। योः। च। मनुः। आयजे इत्याऽय
जे। पिता। तत्। अश्याम। तव। रुद्र। प्रणीताविति प्रऽनीतौ। मा। नः। महां
तं। उत। मा। नः। अर्भकं। मा। नः। उक्षंतं। मा। नः। उक्षितं। मा। नः। व उत।
धीः। पितरं। मा। उत। मातरं। प्रियाः। मा। नः। तन्वः॥२॥ रुद्र। रीरिषः।
मा। नः। तोके। तनये। मा। नः। आयुषि। मा। नः। गोषु। मा। नः। अश्वे
षु। रीरिषः। वीरान्। मा। नः। रुद्र। भामिनः। वधीः। हविष्मंतः। नमसा।
विधेम। ते। आरात्। ते। गोघ्न इति गोऽघ्ने। उत। पूरुषघ्न इति पूरुषऽघ्ने।

प॰१०
॥१॥

क्षयद्वीरायेति क्षयत्ऽवीराय।सुम्नं।अस्मे इति।ते।अस्तु।रक्षा।
च।नः।अधीति।च।देव।ब्रूहि।अध।च।नः।शर्म।यच्छ।द्विबर्हा इ
ति द्विऽबर्हाः।स्तुहि॥३॥श्रुतं।गर्तसदमिति गर्तऽसदं।युवानं।
मृगं।न।भीमं।उपहत्नुं।उग्रं।मृड।जरित्रे।रुद्र।स्तवानः।अन्यं।
ते।अस्मत्।नीति।वपंतु।सेनाः।परीति।नः।रुद्रस्य।हेतिः।वृण
क्तु।परीति।त्वेषस्य।दुर्मतिरिति दुःऽमतिः।अघायोरित्यघऽयोः।
अवेति।स्थिरा।मघवद्भ्य इति मघवत्ऽभ्यः।तनुष्व।मीढ्वः।तोका
य।तनयाय।मृडय।मीढुष्टमेति मीढुःऽतम।शिवतमेति शिवऽ ॥१॥
तम।शिवः।नः।सुमना इति सुऽमनाः।भव।परमे।वृक्षे।आयु
ध

धं।निधायेति निऽधाय।कृत्तिं।वसानः।एति।चर।पिनाकं॥४॥बिभ्र
त्।एति।गहि।विकिरिदेति विऽकिरिद।विलोहितेति विऽलोहित।नमः।
ते।अस्तु।भगव इति भगऽवः।याः।ते।सहस्रं।हेतयः।अन्यं।अस्म
त्।नीति।वपंतु।ताः।सहस्राणि।सहस्रधेति सहस्रऽधा।बाहुवोः।त
व।हेतयः।तासां।ईशानः।भगव इति भगऽवः।पराचीना।मुखा।कृ
धि॥५॥अस्मिंऽस्तनुवस्कहि पिनाकमेकान्नत्रिंशत्॥३०॥सहस्रा
णि।सहस्रश इति सहस्रऽशः।ये।रुद्राः।अधीति।भूम्यां।तेषां।सह
स्रयोजन इति सहस्रऽयोजने।अवेति।धन्वानि।तन्मसि।अस्मिन्।
महति।अर्णवे।अंतरिक्षे।भवाः।अधि।नीलग्रीवा इति नीलऽ

पदे० ग्रीवाः। शितिकंठा इति शितिऽकंठाः। शर्वाः। अधः। क्षमाचराः। नी
लग्रीवा इति नीलऽग्रीवाः। शितिकंठा इति शितिऽकंठाः। दिवं। रुद्राः।
॥१०॥ उपश्रिता इत्युपऽश्रिताः। ये। वृक्षेषु। सस्पिंजराः। नीलग्रीवा इति नी
लऽग्रीवाः। विलोहिता इति विऽलोहिताः। ये। भूतानां। अधिपतय इत्य
धिऽपतयः। विशिखास इति विऽशिखासः। कपर्दिनः। ये। अन्नेषु।
नि विविध्यंतीति विऽविध्यंति। पात्रेषु। पिबतः। जनान्। ये। पथां। पथिर
क्षय इति पथिऽरक्षयः। ऐलबृदाः। यव्युधः। ये। तीर्थानि। २॥ प्रचरं ॥१०॥
तीति प्रऽचरंति। सृकावंत इति सृकाऽवंतः। निषंगिण इति निऽसंगिनः।
ये। एतावंतः। च। भूयांसः। च। दिशः। रुद्राः। वितस्थिर इति विऽत

स्थिरे। तेषां। सहस्रयोजन इति सहस्रऽयोजने। अव। इति। धन्वानि। तन्मसि। न
मः। रुद्रेभ्यः। ये। पृथिव्यां। ये। अंतरिक्षे। ये। दिवि। येषां। अन्नं। वातः। वर्षं।
इषवः। तेभ्यः। दश। प्राचीः। दश। दक्षिणा। दश। प्रतीचीः। दश। उदीचीः। द
श। ऊर्ध्वाः। तेभ्यः। नमः। ते। नः। मृडयंतु। ते। यं। द्विष्मः। यः। च। नः। द्वेष्टि। तं।
वः। जंभे। दधामि। २॥ तीर्थानि च प्रचरंत्वे॥११॥ नमस्ते नमो हिरण्यबाह
वे नमः सहमानाय नि नम आव्याधिनीभ्यो नमो भवाय च नमो ज्येष्ठाय च नमो
दुंदुभ्याय च नमः सोमाय च नमस्त्रिण्याय च द्रापे सहस्राण्येकादश॥११॥
नमस्ते नमो भवाय च द्रापे सप्तविंशतिः॥२७॥ ॐ॥ म॥ ॥श्री॥ ॥श्री॥ ॥